वर्ष 10 अंक 33, जुलाई-सितम्बर 2019
ISSN 2320-3455

जयश्री रॉय की कहानियों में नारी चेतना

■ डॉ. हेमलता सी.पी.

समय की सच्चाई के साथ आगे बढनेवाली सशक्त गद्य विधा है कहानी । कहानियों के माध्यम से मनोरंजन के साथ-साथ नीति का उपदेश भी प्राप्त होता था । शुरु-शुरु में कहानियों के द्वारा असत्य पर सत्य, अधर्म पर धर्म, अन्याय पर न्याय का विजय प्रस्तुत की गयी है । हिन्दी कहानी के क्षेत्र में प्रेमचंद के आगमन से नया मोड आया । यथार्थवादी कहानियों के माध्यम से आपने जन-मानस में लहरें उडाई । समानान्य जन आपकी कहानियों का केन्द्र बन गया है । यथार्थ जीवन की कटु विषमताएँ प्रेमचंदजी द्वारा अपनी कहानियों में उभारा गया है । कफन, पूस की रात, कफन, पूस की ठाकूर का कुआँ आदि में किसान, मजदूर वर्ग के प्रतिनिधित्व हमें मिलता है । आगे चलकर हिन्दी कहानी में अन्य अनेक श्रेष्ठ रचनाकार आये । विभिन्न कथ्य, केन्द्र और जीवन्त चित्रों ने पाठकों के मन को आकृष्ट भी किया है ।

समय और साहित्य का अटूट, अविराम रिश्ता है । साहित्य में कालांकन की प्रवृत्ति होती हैं और साहित्य कालजयी भी होते हैं । उत्तर आधुनिक युग आते ही समाज और साहित्य में समाज केन्द्रित स्थिति के स्थान पर व्यक्ति केन्द्रित परिस्थिति आ गई है । व्यक्ति अन्तर्विरोध से तपनेवाले बन गये है । उनके अन्तर्विरोध रचनाओं का केन्द्र बनने लगे । गाँव का शहरीकरण, सुविधा भोगी दूसरी प्रकार की मानसिकता, राजनीतिक उथल, पुथल, भूमण्डलीकरण का प्रभाव आदि साहित्य के हर विधाओं को प्रभावित करने लगे । यही उत्तर आधुनिकता बोध हिन्दी कहानी में भी कथ्य बनने लगे । उपभोक्तावादी संस्कृति और विकेन्द्रीकरण ने मनुष्य के आपसी संबन्ध को नीचे गिरा दिया है । ऐसे जीवन के सशक्त चित्र कहानी में मिलते है । इसलिए कि कहानी और जीवन एक ही सिक्के के दो पहलू ही है । नयी कहानी, अकहानी आदि में जीवन का भिन्न-भिन्न स्तर का चित्र खींचा है । नारी लेखिकाओं के आगमन से नये ढंग की कहानी की उत्पत्ति भी हुई है । उत्तर आधुनिकता के नये-नये भावों और विचारों से कहानी का चित्रण अतिसूक्ष्म स्तर तक पहुँचा है । कहानी के तेज रफ्तार में विमर्शों के बाद आ गये । दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, बाल विमर्श, वृद्ध विमर्श, किन्नर विमर्श आदि में हाशियेकृत वर्गों की कहानी प्रस्तुत है ।

उत्तर आधुनिक उपभोक्तावादी संस्कार स्त्री को उपयोगी चीज मानते है । स्त्री विमर्श की अधिकांश कहानियाँ इसी बात को लेकर आगे बढ़ती हैं। स्त्री पर होनेवाले अत्याचार के पीछे समाज की गिरी हुई मानसिकता ही है । हिन्दी कहानियों में महिला लेखन का समुचित विकास ही हुआ है । मृदुलागर्ग, ममता कालिया आदि की कहानियों से शक्ति पाकर हिन्दी कहानी लेखन में नव-नव लेखिकाएँ लिखने लगी । राजि सेठ, सूर्यबाला आदि की कहानियों में स्त्री की जीवन विषमताओं का वर्णन मिलता है । चित्रा मुदगल की कहानियों में नारी संवेदना मुखरित है । विवाह के शीघ्र बाद ही पति से धोखा खानेवाली पत्नी की यातनापूर्ण जीवन त्रासदी आपकी कहानी में देख सकते हैं । अलका सरावगी की 'कहानी की तलाश' गीतांजली श्री की 'अनुगूँज' आदि मे अति आधुनिक स्थिति में मानसिक अन्तर्विरोध सहनेवाली नारियों की कहानी संकलित है ।

समकालीन हिन्दी साहित्य में नारीवाद का विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण स्थान है । समाज से कटे गये वर्गों में सबसे पीडित, शोषित वर्ग औरतें ही हैं । जन्म से तिरस्कार पाकर आगे की जिन्दगी में उसे अनेक प्रकार की विषमताओं से जूझना पडता है । पुरुष वर्चस्व समाज में अपना अस्तित्व त्यागकर जीने के लिए स्त्री विवश हो जाती है । आर्थिक उत्पीडन और सामाजिक, पारिवारिक तिरस्कार से जूझनेवाली नारी के यथार्थ चित्र तत्कालीन हिन्दी कहानी में खूब मिलते हैं ।

सन् 2000 के बाद की स्त्रीवादी कहानिकारों में जयश्रीराय का अपना स्थान है । आप नारी जीवन की अति-सूक्ष्म पहलुओं पर प्रकाश डालकर अत्यन्त रोचक ढंग से समकालीन नारी का चित्र प्रस्तुत करती है । अपनी अस्मिता के बिना रहने केलिए विवश नारी उसकी कहानियों का केन्द्र पात्र है । आपका जन्म बिहार में

Principal
W.M.O. ... College
Scanned with AnyScanner

हुआ । आपने उपन्यास, कहानी और कविता के क्षेत्र में लेखनी चलायी है । अनकही, खारा-पानी, तुम्हें छू लू जरा, कायान्तर आदि आपके कहानी संग्रह है । औरत जो नदी है, साथ चलते हुए, इक्बाल आपके उपन्यास है । तुम्हारेलिए आपका कविता संग्रह है । 2012 में युवा कथा सम्मान पुरस्कार मिला । कुछ वर्षों तक अध्यापन कार्य करने के बाद स्वतंत्र लेखन में कार्यरत हैं । कायान्तर कहानी संग्रह का प्रथम संस्करण 2015 में हुआ ।

तुम आए तो - 'चम्पा'

'कायान्तर' कहानी संग्रह की प्रमुख कहानियाँ है तुम आए तो, काली-कलूटी, कुहासा, कायान्तर, दर्दजा, काँच के फूल आदि । 'तुम आए तो' शीर्षक कहानी में तत्कालीन लिविंग टुगेदर' का चित्रण है । अति-आधुनिक रवैये का स्त्री-पुरुष संबन्ध और उसमें घुटन सहनेवाली नारी जीवन की समस्याएँ इस कहानी का मुख्य विषय है । चम्पा और कबीर इस कहानी के पात्र हैं। दोनों अपनी इच्छानुसार एक साथ जीवन बिताते है । लेकिन समाज में ऐसा जीवन बितानेवालों के प्रति दिखायी जानेवाली घृणा, असन्तोष ये सब एक नारी होने से चम्पा को सहनी पड़ती है । बिना शादी के स्त्री-पुरुष संबंध को बुरी नजरों से देखने के कारण दोनों को रहने केलिए किराये पर अच्छे मकान भी नहीं मिलते है । जो मकान मिला है, वहाँ के पडोसी लोग इनको देखना भी पसन्द नहीं करते हैं ।

सामाजिक जीवन में समाजसेवक, समाज सुधारक लगनेवाला कबीर पारिवारिक जीवन में असफल है । दोनों के बीच में हमेशा सूनापन है । चम्पा कबीर केलिए दोनों प्रकार की भूख मिटानेवाली मात्र है । जब चम्पा माँ होनेवाली है, यह सुनते ही उसके हाथ में गर्भपात केलिए कुछ रुपये देकर कबीर ने ऐसी चेतावनी दी है -''मुझे क्या पता था तीस साल की औरत को इतनी सी सावधानी रखनी नही आती ! जिस्म तुम्हारा है, इसे संभालना भी तुम्हे ही है।''1 यहाँ चम्पा का विचार दूसरा है कि अगर एक बच्चा पैदा होगा तो उसके अकेलापन दूर हो जाएगा । ऐसी कामना करनेवाली चम्पा से कबीर की प्रतिक्रिया यह है कि 'स्वार्थी कम होना है', अपने परिवार के पहले दुनिया की देखभाल करना मनुष्य का कर्तव्य है । ऐसे में कबीर सशक्त समाज सेवी का काम निभाने को चाहनेवाला है । भाषण तंत्र में कबीर सफल है लेकिन अफनी सहजीवी के साथ के जीवन तंत्र में वह असपल है । उसकी दुनियावादी चिन्ताओं में उस सहजीवी चम्पा का कोई अस्तित्व और स्थान नहीं है । चम्पा की राय में कबीर को समझाना असंभव है । छोटे ही समय के जीवन से उसे पता चला कि ''पत्थर को पिघलना आसान है लेकिन कबीर को उसके फैसले से डिगाना असंभव है । चम्पा में एक लेखिका की क्षमताएँ है । लेकिन उसके लेखन के प्रति कबीर हमेशा अवज्ञा प्रकट करता है । ऊँची चिन्तनधारा के अनुसार श्रमिकों की बात करते हुए वह घरेलू स्त्रियों के संबन्ध में 'अनरेड लेबर' शब्द का प्रयोग करता है । लेकिन अपनी सहजीवि चम्पा को ऐसी श्रेणी में भी स्थान नही देता है । चम्पा अपने साथ जीने केलिए भोजन बनाकर उसके पेट की भूख और शरीर की भूख मिटानेवाली चीज मात्र बन गयी है । चम्पा को याद दिलाकर कबीर का कथन है-''ज्यादा बीवी बनने की कोशिश मत करो।''2 ऐसा हो तो भी घर का सारा काम उसके जिम्मे पर ही है । कबीर और उसके मित्रों केलिए गरम-गरम खाना परोसना, उनके खाने-पीने के वक्त रसोई में घुटन सहनकर समय काटना, उसकी रोटी भी उनकेलिए देना, अन्त में पानी पीकर भूख मिटाना उसकी विषमता बन गयी है । 'क्या तुमने खाना खाया है' ऐसा प्रश्न भी कबीर नही करता है । कबीर की डाँट सुनकर, उनसे कभी-कभी उपेक्षा पाकर, अपने सारे स्वप्न भंग सहकर वास्तव में वह थक गयी है । एक प्रकार के तानाशाही चलानेवाले कबीर सह-अस्तित्व को स्वीकारनेवाला नही है । कबीर के अनुसार 'शादी नही की है-इसलिए उस पर ऐसी कोई जिम्मेदारी नहीं है' । उसके दिमाग में दुनिया भर की बाते है, इन बातों में कही भी चम्पा को स्थान नही हैं । बिना ताल-मेल से आगे चलनेवाले उस दिन में पुरानी डायरी से मिली एक कविता चम्पा ने एक साहित्य पत्रिका में भेज दी और उस पत्रिका से स्वीकृति की सूचना मिली है । इसके बाद पत्रिका के सब एडिटर अर्पित से उसका परिचय हुआ । उसकी कविता पर उनसे

Scanned with AnyScanner

खूब प्रशंसा भी मिला । दोनों आपस में मिलने लगे बातें करने लगे । अर्पित बहुत भद्र चरित्रवाला आदमी है । उसकी पत्नी मर गयी । उसे एक छोटी बच्ची है, उसके लिए माँ की जरूरत है । इसी बीच कबीर का संबन्ध एक दूसरी स्त्री से भी हुआ है । ऐसे संबंध को जानकर चम्पा के पूछने पर दोनों में झगड़ा हुआ। कबीर उसे मार दिया है, धकेल दिया है । चम्पा को चोट लगी है । शारीरिक चोट से अधिक मानसिक चोट हुई है । कबीर की ऐसी वाणी द्वारा उसका मन फूट पडा जो कि 'बीवी बनती हो ।'3 इतने में जो मानसिक तनाव उत्पन्न हुआ है । कबीर को छोडकर वह अर्पित के घर गयी । दोनों एक साथ जीना चाहते है, उसी वक्त कबीर ने उसे फॉन पर घर आने को कहा । चम्पा, सशक्त निश्चित आवाज में उत्तर देती है । यह उसकी हमेशा की अवहेलना और अपमान की प्रतिक्रिया है, जैसे- ''आइन्दा मेरे पति बनने की कोशिश मत करना ।''4 वह अर्पित की पत्नी और उसकी बेटी की स्नेहमयी माँ बन गयी है । इससे कबीर को मालूम हुआ कि हमेशा केलिए एक को गुलाम रख नहीं सकते हैं । इस कहानी से हमें मनेलूम होता है कि शादी पर विश्वास होना, न होना यह कोई समस्या नहीं है लेकिन जिसे अपना सहजीवि के रुप में साथ स्वीकारते है उसको मानसिक सहारा देना अनिवार्य है । एक स्त्री की माँ बनने की इच्छा पर काबू करना भी बुरी बात है । अपनी तानाशाही से कोई फायदा नही है, घर उजाड हो जाएगा । कम से कम प्यार के साथ जीना चाहिए । शादी के बिना एक साथ जीना विदेश संस्कृति है, उसका अन्धानुकरण करना आसान है लेकिन ऐसे जीवन में सफलता प्राप्त होना कठिन बात ही है । नारी की अस्मिता पर आक्रमण करना अच्छा नही है । अपनी सारी कामनाएँ अस्त होकर बेसहारा रहनेवाली नारी उसके भविष्य की उमंग के साथ जीवन आगे बढाती है । यहाँ कहानिकार का सदुद्देश्य व्यक्त होता है । नारी, जीवन भर पुरुष का गुलाम रहनेवाली नही है । पुरुषवर्चस्व समाज का शोषण सहकर जीने केलिए विवश नारी का जीवन अंत तक कष्टपूर्ण होता है । सामाजिक, पारिवारिक उलझनों से तडपनेवाली नारी अपनी अस्मिता की खोज जरूर करती होगी ।

काली कलूटी-'लावण्य'

जयश्री रॉय की सशक्त कहानी है 'काली कलूटी' । आधुनिक समाज में भी शादी के मामले में सज-संवर कर रहनेवाली बन गयी है नारी । शादी की बात आते वक्त लडके और लडकेवालों के पसन्द केलिए तैयार होकर रहना नारी की विवशता है । समाज में ऐसा रीति-रिवाज है कि लडकी है तो उम्र आते ही विवाह संपन्न होने केलिए लडके और उसके सगे-संबन्धियों के मुआयने केलिए रहना है । ऐसी स्थिति उसकेलिए जितनी मानसिक पीडायें देती है, उसके मन में हीनभावना पैदा कर देते है । यह लडके और लडकेवाले सोचते भी नहीं है । लडकी के अपने परिवार वाले भी इसके प्रति सतर्क नही है । लडकी का रुप सौन्दर्य, चाल-चलन में अधिक ध्यान देनेवाले समाज के सामने काली, असुन्दर लडकी हमेशा केलिए अपशकुन ही है । सामान्य रुप से लडकी यौवन में मधुर स्वप्नों में डूब रहती है उसका स्वप्न साक्षात्कार शादी से पूर्ण माने जाते है । लेकिन शादी केलिए अपने घर आनेवालों के सामने तैयार होकर आना मुशकिल बात ही है, अगर लडकी असुन्दर भी है तो बात अलग होती है ।

काली-कलूटी' शीर्षक कहानी ऐसी एक नारी की इच्छाएँ, विवशताएँ और आकाँक्षाओं का संचय है । साथ ही समाज के सौन्दर्य धारणाओं के प्रति आक्रमण भी है । कालापन ऐसा शाप माना जाता है कि वह असुन्दर, काली, कुरुप लडकी शादी के लिए योग्य नही है । 'काली-कलूटी' का केन्द्र पात्र 'लावण्य' है । अपने नाम के अपवाद स्वरुप अधिक काली और कुरुप लगती है । उसके घरवालों को उसकी शादी जल्द ही करनी है । लावण्य की भाभी बहुत सुन्दर, सुडौल है। उसकी वाणी में काँटे हैं । लावण्य एक कचहरी में टाइपिस्ट है फिर भी अपने पैरों पर खडे रहनेकेलिए हिम्मत नही है और हक भी नही । लावण्य की माँ, बेटी की कुरुपता के कारण बहुत परेशानी में हे उसके रुप सौन्दर्य केलिए सारी जतन के बाद वह हार गयी है । नये -नये फाशन स्वीकार करने केलिए पेशन चेनैल देखने को माँ लावण्य को प्रेरणा देती है । समाज की दृष्टि से

Scanned with AnyScanner

लड़की का सौन्दर्य उसके रंग, रूप, सुन्दर-सुडौल अंगों पर है । लावण्य का शरीर रुखा सूखा जैसे हड्डी मात्र है । भाभी की बेढब बातें, माँ का दु:ख, भैया की परेशानी लावण्य को हमेशा सताती है । वह अपने में समेट होकर सोचती है वह किसी केलिए योग्य नही, उसे कभी कोई नहीं अपनायेगा । उसका मन अधिक व्याकुल है कि मुझे भी प्यार चाहिए, अपना घर, परिवार चाहिए । इसी बीच अपने आफिस में आये आलोक के साथ उसका घनिष्ठ संबन्ध होने लगा । घनिष्ठता उसके तन-मन को संतुष्ट बनाती है । अपनी साथी की मनाही को अनुसुना करके वह आलोक के साथ समय बिताने लगी । लेकिन पुरुष की क्रूरता का प्रमाण देकर आलोक उसको धोखा देकर चले गये । शारीरिक और मानसिक शोषण के बाद हताश होकर अपनी कुरुपता को कोसने लगी ।

यहाँ जीवन की यातायें सहनेवाली अविवाहित नारी पर पुरुष का अत्याचार भी प्रस्तुत है । नये उपभोक्ता संस्कृति में सभी केवल चीज बन गयी है । लावण्य इसका प्रतीक मात्र है । शैक्षिक स्तर पर आगे बढ़े गए आधुनिक समाज में भी ऐसी रीति प्रचलित है कि लड़की की पढ़ाई से भी प्रमुखता उसकी शादी करके भेजने में हैं ।

कुहासा-'पारुल'

'कुहासा' शीर्षक कहानी में पारुल शादी के सोलह वर्ष बाद बच्चा पैदा न होने के कारण पति से अलग होने की डर से तड़पनेवाली नारी हैं । जो स्त्री माँ न बन सकी, वह स्त्री नही, उसके नाम पर एक कलंक मात्र हैं, उसके लिए अनेक विशेषण है जैसे -

रात-दिन सास उसे कोसती है, उलाहने देती है । विधाता ने उसे मनुष्य बनाया, हृदय दिया, करुणा दी, मगर समाज ने उसे मात्र भोग की वस्तु समझा, भोगा, दुत्कार दिया और खोखलाकर फेंक दिया -'किसी शंख की तरह ।' जिस घर केलिए उसने हड्डी तोड़ काम किया है उस घर में उसका कोई स्थान नही है । लेकिन कहानी के नये मोड़ पर 'पारुल' ने अपने को बेकसूर स्थापित की है । अपना कोख रुखा-सूखा नही है, इसका प्रमाण निकला है । किसी दूसरे से बलात्कार के शिकार होने के बाद वह गर्भवती हो गयी । यहाँ स्त्री पर हुए अत्याचार के बदले में कहानीकार उसका माँ बनने की शक्ति प्रस्तुत करने में जोर देती है । यहाँ नायिका द्वारा समाज को चेतावनी भी है । स्त्री पर बंजर, ऊसर, माटी जैसे आरोप लगाने की, ऐसे निर्मम आरोप से उसके दिल की कचोटी आदि इस कहानी द्वारा प्रस्तुत करती है ।

जयश्री राय की इन्हीं कहानियों के माध्यम से आधुनिक उपभोक्ता संस्कृति के शिकार बनी गयी नारी का भिन्न-भिन्न रुप प्रकट होता है । ऐसी प्रतिनिधियों से ही ही नही आज के हमारे चारों ओर के भिन्न-भिन्न अनुभवों से भी यह स्पष्ट विदित होता है कि नारी उत्पीड़न, संकट विसंगतियाँ आदि विभिन्न रुपों में आज भी हमारे समाज में विद्यमान है । स्त्री को कम से कम मनुष्य मानने से, अपनी सहजीवि मानने से समाज का दृष्टिकोण बदलने से सारी समस्यायें एक हद तक दूर हो जाएगे । आशा हैकि आनेवाली दुनिया में ऐसी स्थिति की स्थापना संभव हो जाए ।

- सहायक प्रध्यापक
एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग
डब्लू. एस. ओ. कला
एवं विज्ञान महाविद्यालय
पी. ओ. मुत्तिल, कलपेट
वायनाड (केरल) 673122

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. जयश्री रॉय, 'तुम आए तो'-कायान्तर, वाणी प्रकाशन, 2015, पृ. सं. 86.
2. वहीं, पृ. सं. 95
3. वहीं, पृ. सं. 98
4. वहीं, पृ. सं. 100
5. मधुरेश, हिन्दी कहानी का विकास, लोकभारती प्रकाशन ।

Scanned with AnyScanner